[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3616

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

रंगों का मनोवैज्ञानिक प्रभाव एवम् रंग चिकित्सा

SAKSHI GUPTA (JRF)
Research Scholar
D.E.I. Agra
E-mail- sakshigupta.net.jrf@gmail.com

सरांश– *संसार में प्रत्येक व्यक्ति अन्तर्मन के भावों को व्यक्त करने के लिये किसी न किसी माध्यम को अपनाता है। किसी के लिये स्वर माध्यम हैं तो किसी के लिये शब्द परन्तु एक चित्रकार के लिये उसके भावों को अभिव्यक्त करने का माध्यम या साधन रंग है। रंगों की विभिन्न तानों के द्वारा मन में उद्वेलित भावों को अभिव्यक्त करता है। वह चित्रों में संयोजन विधियों का पूर्ण ध्यान रखते हुये कहीं गहरे या तीखे रंगों का प्रयोग करता है तो कहीं हल्के व कोमल रंगों का। इस विधि से अपने भावों की अभिव्यक्ति करके उसे आत्म–संतोष मिलता है। एक कृति अपने भीतर छुपे हुये अनेक आयामों को उद्घाटित करती है। एक कलाकार ने उसे कितने ही भिन्न दृष्टि कोण से बनाया हो परन्तु दर्षक के सम्मुख वह एक भिन्न रूप व अर्थ में प्रस्तुत होती है, यही इसकी शक्ति व प्रतिभा है। एक कलाकार के लिये रंग उसकी कृति का महत्वपूर्ण अंग है। वह समूची प्रकृति इस सम्पूर्ण विष्व को विभिन्न रंगों के माध्यम से ही उद्घाटित करता है।*

प्रत्येक मनुष्य के जीवन में रंगों का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। रंग एकमात्र सौन्दर्याभिव्यक्ति का माध्यम ही नहीं अपितु इसका एक मनोवैज्ञानिक पक्ष भी है, व्यक्ति की मानसिकता पर सकारात्मक व नकारात्मक प्रभाव डालता है। रंग चिकित्सा के द्वारा व्यक्ति अपने गुस्से, अपने तनाव से स्थिलता पाता है। अमेरिका के एक सेवानिवृत्त शल्यकार के अनुसार ''रंग करने से अचेतन मन चैतन्य हो जाता है और हम किन कारणों से परेशान हैं, यह भी जाहिर हो जाता है।''

मेरे द्वारा चयनित विषय ***''रंगों का मनोवैज्ञानिक प्रभाव एवम् रंग चिकित्सा''*** *रंगों के महत्व, जीवन में स्थान, अर्थ व प्रतीकात्मकता को* ***पद्म विभूषण सैयद हैदर रज़ा*** *की कृतियों द्वारा प्रस्तुत करूँगी।*

"Colour can repair and heal the body, when the frequency of the colour aligns with the emotions needed to activate the micro particulars see healing can take place.....The use of colour in visualization is most effective and easiest for the novice to utilise, as colour has a very story radiations effect on the whole body every form of colour therapy is fundamentally symbolic." - Campbell

रंगों में इतनी क्षमता होती है कि वे हमारे मस्तिष्क की अनेक दुविधाओं का समाधान कर हमारे मस्तिष्क को निम्न स्तर से ऊच्च स्तर पर ले जा सकें। जब रंगों की आवृत्ति व हमारी मनः स्थिति अर्थात् भावनाओं एक–दूसरे से मिलती हैं तो वे मन–मस्तिष्क को स्थिरता प्रदान करते हैं। मानव के लिये अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का सबसे आसान साधन रंग हैं। एक अन्जान व्यक्ति के लिये दृष्य रूप में रंगों का उपयोग सर्वाधिक प्रभावशाली व सरल होता है, रंगों को इस प्रकार प्रयोग में लाना जैसे कि वे हमारे शरीर में अत्यन्त शक्तिशाली रेडियोधर्मी प्रभाव डालते हों। रंग चिकित्सा की प्रत्येक प्रक्रिया आधारिक रूप से प्रतीकात्मक होता है।

कला की व्याप्ति अनन्त है, उसकी कोई सीमा नहीं है। प्रत्येक कलाकार अपनी–अपनी सुविधा से कला के माध्यम का चयन करता है। इच्छित मनोभावों की सरल और सटीक अभिव्यक्ति के लिये माध्यम विशेष का चयन महत्वपूर्ण हो जाता है। मस्तिष्क में उद्वेलित भावों को एक कवि शब्दों से, संगीतकार राग व आलापों से व एक चित्रकार रंगों व रेखाओं से अभिव्यक्ति करता है। जिस प्रकार किसी शरीर की सजीव अवस्था के लिये आत्मा का महत्व है तो उसी प्रकार एक चित्र की आत्मा रस है। चित्रकला में रसाभिव्यक्ति का साधन रंग हैं। नाट्य शास्त्र में प्रत्येक रस का सम्बन्ध एक विशेष वर्ण से स्थापित किया है। चित्र में रंग की विभिन्न तानें, छाया–प्रकाश व भिन्न–भिन्न रंगों का एक–दूसरे से सम्बन्ध शवोत्पादक का कार्य करते हैं।

कला मनुष्य के भावों व संवेदनाओं का दृष्यमान रूप है। इसके प्रकटीकरण के लिये कलाकार कुछ मानदण्डों व तत्वों का प्रयोग करता है जिसके द्वारा वह अपनी कलात्मकता की भावपूर्ण प्रस्तुति को और अधिक प्रभावपूर्ण बनाता है। विभिन्न शास्त्रों, ग्रन्थों व पुराणों में कला के कुछ नियम व तत्वों का वर्णन किया गया है, उन तत्वों में से एक रंग है। कलाकृति में रूप की सजीवता की कल्पना रंगों द्वारा ही सम्भव होती है। चित्र तत्व में रंग का प्रमुख स्थान है। यह भावों की अभिव्यक्ति का प्रमुख

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

साधन है। व्यक्तित्व की अत्यन्त गहनतम बातों को कलाकार रंगों के माध्यम से ही व्यक्त करता है। रंगों की अनुभूति का माध्यम प्रकाश है।

रंग का अंकन व प्रयोग चित्र में अनेक रूपों व योजनाओं के अन्तर्गत किया जाता है। रंग योजना अनेक प्रकार की होती है– प्राथमिक रंग योजना, द्वितीयक रंग योजना, तृतीयक रंग योजना एकाकी रंग योजना, ऊष्ण व शीत रंग योजना। प्रत्येक रंग व रंग योजना का प्रभाव हमारे मस्तिष्क, व्यक्तित्व व समाज पर भिन्न–भिन्न रूप में होता है। रंग का प्रमुख तत्व व मान रंगत है जो कि तान द्वारा प्रस्तुत होता है। तान के द्वारा ही एक रंग से बने चित्र में नीरसता को समाप्त कर आकर्षण व रुचि उत्पन्न की जाती है। रूपाकारों को द्विआयामी व त्रिआयामी प्रभाव के साथ, वस्तुओं का विभाजन आदि प्रभावों के अतिरिक्त अन्य अनेक प्रकार से चित्र संयोजन को आकर्षक बनाया जा जाता है। कला के सभी तत्व चित्राकृति संयोजन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं परन्तु रंग का अन्य सभी तत्वों से एक अद्‌भुत सम्बन्ध है। मानव जीवन में रंगों का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। वर्ण पूर्णतः प्रकाष व दृष्टि पर निर्भर तत्व है। दोनों में से किसी एक का आभाव रंग ज्ञान में बाधा उत्पन्न करता है। चित्रकला के सभी तत्वों में से वर्ण सबसे अधिक संवेदनशील व संवेगात्मक व प्रतीकात्मक तत्व है।

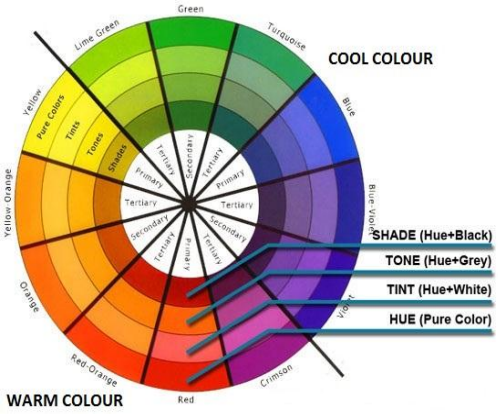

Fig.1 Colour Wheel with Shades, Tones, Tints and Hue

रंग न सिर्फ मानव मन–मस्तिष्क को आनन्दित करते हैं वरन् उसके शारीरिक व कष्टों के निवारण में भी सहायक होते हैं। रंग मन की विशेष स्थिति या स्तर को निर्मित करने में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। रंग व्यक्ति के मानसिक भावनाओं व संवेदनशीलता को प्रभावित करते हैं।

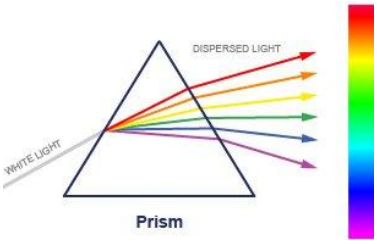

Fig. 2 Filtration of colours form light

रंग चिकित्सा, क्रोमोथेरेपी या कलरोलॉजी अन्य चिकित्सा पद्धतियों की भांति ही एक रोग निवारक उपाय है। इस चिकित्सा प्रक्रिया में प्रकाश को रंग के रूप में उपयोग करते हैं, जो व्यक्ति के शरीर में ऊर्जा को सन्तुलित रखने का कार्य करती है चाहे वह भावनात्मक व आध्यात्मिक स्तर पर हो या शारीरिक व मानसिक स्तर पर। ।अपबमददं ने निदान और उपचार दोनों रूप में रंग को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। उन्होंने अपनी पुस्तक श्ब्द्वद व्िडमकपबपदमश में इसकी चर्चा की है।

"Colour is an observable system of disease." -Avicenna

उन्होंने तापमान व शारीरिक अवस्था से सम्बन्धित तालिका भी विकसित की है। उनके अनुसार लाल रंग रक्त को संचालित करता है, नीला व श्वेत रंग मांसपेशियों में दर्द व सूजन को कम करने में सहायता प्रदान करता है।

Scientist Dinshah P. Ghadiali के अनुसार ''रंगों के उच्च ऑक्टेव्स रासायनिक पोटेन्सीस का प्रतिनिधित्व करते हैं और शरीर के प्रत्येक भाग व प्रणाली के लिये एक विशेष रंग है जो उसे व उसकी कार्य प्रणाली को प्रभावित करता है।''

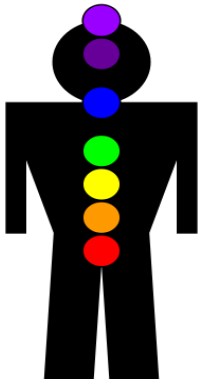

Fig. 3 Position of Chakras in body

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

रंग विद्युत चुम्बकीय ऊर्जा की तरंग दैर्ध्य है जो हमारी आँखों द्वारा देखते हैं वह दृष्य वर्णक्रम का एक हिस्सा होते हैं जो किसी निश्चित वस्तु को देखने पर वापस परिलक्षित होता है। जब सभी रंग आपस में जुड़ते हैं तो इनके योग का परिणाम होता है श्वेत प्रकाश। इसी कारण श्वेत प्रकाश में कार्य करना हमारे मस्तिष्क को शान्ति, एकाग्रता, पूर्णता का अनुभव देता है।

आयुर्वेद चिकित्सक यह मानते हैं कि शरीर में *सात चक्र* स्थित होते हैं जो कि रीढ़ की हड्डी में अवस्थित होते हैं। प्रत्येक चक्र का एक निश्चित रंग व प्रकाश होता है जो कि एक निश्चित शारीरिक अंग को नियन्त्रित करता है। उपरोक्त कथन के अनुसार यदि चक्रों की क्रिया असन्तुलित होती है तो यह शारीरिक रोगों का कारण बनता है परन्तु उस निश्चित रंग का उपयोग उस असन्तुलन को सुधार सकता है।

आयुर्वेदाचार्यों द्वारा वर्णित रंग तालिका :–

रंग	चक्र	चक्रों की स्थिति	कार्य	प्रणाली
लाल	प्रथम (मूलाधार चक्र)	रीढ़ का हड्डी के मूल भाग	आधार व जीवन के लिये	गुर्दे, रीढ़ की हड्डी व गन्धेन्द्रिय
नारंगी	द्वितीय (स्वाधिष्ठाना चक्र)	जननेन्द्रीय का ऊपरी भाग	भावनायें विषेषतया रति भावना	प्रजनन तन्त्र, पारिसंचरण तन्त्र
पीला	तृतीय (मणिपुर चक्र)	उदर का निचला भाग	शक्ति व अहम	उदर, पित्ताषय व अग्नाषय
हरा	चतुर्थ (अनाहत चक्र)	हृदय	प्रेम व जिम्मेदारी की भावना	हृदय व फेफड़े
आसमानी	पंचम (विषुद्ध चक्र)	ग्रीवा	शारीरिक व आध्यात्मिक संचार	ग्रीवा, कान, मुँह व हाथ
नीला	षष्ठम (अजना चक्र)	भृकुटियों के मध्य	क्षमा, दया व समन्वय की भावना	नेत्र व पीनियल ग्रन्थि
बैंगनी	सप्तम (सहस्त्रार चक्र)	कपाल	दैवीय ऊर्जा से संयोग, विचारों व ज्ञान का आदान–प्रदान	केन्द्रीय तन्त्रिका तन्त्र, मस्तिष्क प्रांतस्था

प्राचीनकाल में इमारतों में रंगीन कांच की खिड़कियों लगाई जाती थीं जिनसे छन कर जब प्रकाश की किरणें कक्ष में प्रवेश करती थीं तो सम्पूर्ण वातावरण वर्णमय होकर अद्भुत व रहस्यमय हो जाता था जिससे मस्तिष्क को शान्ति की अनुभूति होती थी। इसके उदाहरण हमें पूर्व से लेकर पश्चिम तक, प्राचीन काल से आधुनिक युग तक देखने को मिलते हैं। बाइजेन्टाइन

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

काल में निर्मित भवनों, गिरिजाघरों में, राजस्थान के सैकड़ों वर्षों पुरानी हवेलियों, महलों व घरों में देखने को मिलते हैं व आधुनिक काल में निर्मित हो रही इमारतों की खिड़कियों व दरवाजों में भी रंगीन काँच का प्रयोग हो रहा है।

COLOR AND THE ZODIAC

SIGN	ELEMENT	COLOR	SPIRITUAL	PHYSICAL	EMOTIONAL
Aries	Fire	Red	Persevere	Hot/Active	Courageous
Taurus	Earth	Pink	Secure	Active/Warm	Sociable
Gemini	Air	Yellow	Wisdom	Move/Cool	Contentment
Cancer	Water	White,Silver	Peaceful	Passive/Cool	Peaceful
Leo	Fire	Orange,Gold	Purity	Hot/Move	Optimism
Virgo	Earth	Brown, Navy	Steadfast	Healing	Confidence
Libra	Air	Pastels	Fertility	Warm/Grow	Balance
Scorpio	Water	Dark Red	Love	Hot/Energy	Strength
Sagittarius	Fire	Purple	Faith	Cooling	Inner Calm
Capricorn	Earth	Blk, Dk Brn	Loyalty	Cool/Strong	Power
Aquarius	Air	Turquoise	Integrity	Cool/Balance	Innovation
Pisces	Water	Sea-Green	Compassion	Balancing	Reflective

चिकित्सकीय व वैज्ञानिक प्रभाव के अतिरिक्त रंगों का सामाजिक मान्यताओं व ज्योतिष के आधार पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव भी मनुष्य पर पड़ता है जो उसकी विचार–धारा को प्रभावित करता है। प्रत्येक राशि का एक निश्चित वर्ण है जो उसका प्रनिधित्व करता है।

"किसी भी चित्र में सबसे प्रमुख व्यक्ति होता है प्रकाश।" – Manet (Impressionist artist)

प्रभाववाद के चित्रकारों के मत था कि एक चित्रकार जब चित्र निर्मित करता है तब उसका ध्यान दृष्यमान वस्तु के यथार्थ स्वरूप की ओर न होकर वस्तु पर पड़ रहे प्रकाश व वातावरण के समुचित प्रभाव को चित्रण की ओर होता है। बदलते हुये प्रकाष के साथ एक वृक्ष को वह हरा, पीला, लाल, जामुनी आदि रंगतों के बदलते हुये रूप में परिलक्षित करता है। रंगांकन की विशुद्धता व कलाकार के मूलभूत स्वातन्त्र्य प्रस्थापना आधुनिक कला को प्रभाववाद की मुख्य देन है। Eugene Delacroix के अनुसार *"किसी भी रंग का यथार्थ अंकन में उसके पूरक रंग की झलक आवश यक है, जिसके बिना उसकी स्वाभाविक चमक का परिणाम चित्रण में प्रतीत नहीं होता।"*

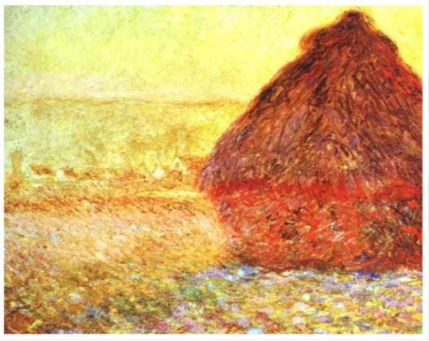

Fig.4 Cloude Monet, Hay stack at the Sunset near Giverney, oil on canvas, 1891

"वस्तु का रंग उसके द्वारा किये गये प्रकाश परावर्तन का परिणाम है।" – Eugene Delacroix (Impressionist artist)

प्रभाववादी कलाकारों ने प्रकाश–विज्ञान, दृष्टि–विज्ञान व रंग विज्ञान का अध्ययन कर अपने चित्रों में रंगों का प्रयोग किया। प्रत्येक रंग को उसके वैज्ञानिक अर्थ के अनुसार ही अंकित किया उदाहरणार्थ– काले रंग का वैज्ञानिक अर्थ है सभी किरणों का आभाव अर्थात् जहाँ जरा सा भी प्रकाश की उपस्थिति है वहाँ काले रंग का प्रयोग वर्जित है। इसी क्रम में परावर्तन के कारण जिसको हम पूर्णतः श्वेत मानते हैं वह वस्तु भी पीले, नीले, लाल, आदि रंगों की स्वयं में झलक लिये हुये होती है। अन्ततः वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि प्रत्यक्ष वस्तु पर उसके निजी रंग के अतिरिक्त अन्य रंगों की भी झलक होती है। वे

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

अपनी कृतियों में रंग विषयक विज्ञान के आधार पर रंग लगाते उदाहरणार्थ जब पूरक रंगों को समीप अंकित करते हैं तो व एक दूसरे की चमक को बढ़ा देते है एवम् समीपीकरण का परिणाम मिश्रण के परिणाम से अधिक तेजस्वी होता है।
प्रत्येक रंग व रंग योजना व्यक्ति के मन–मस्तिष्क पर चिकित्सीय, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक व ज्योतिष आदि अनेक प्रकार से प्रभावित करते हैं। परन्तु प्राथमिक व द्वितीयक रंग (लाल, नारंगी, पीला, हरा, नीला, बैंगनी, काला व श्वेत) व्यक्ति के ध्यान को अधिक प्रभावित करते हैं।
अनेक आधुनिक कलाकार उपरोक्त रंगों का संयोजन कर अपनी कृतियाँ निर्मित करते हैं परन्तु **पद्म विभूषण सयैद हैदर रज़ा** की कृतियों में उपरोक्त रंगों का संयोजन हमें अधिक आकर्षित व प्रभावित करते हैं।

"चित्रकला एक सजीव वस्तु है जो सांस लेती है। एक चित्रकार के पास दृष्टि होनी चाहिये क्योंकि एक सजीव अवधारणा और छिपे हुये यथार्थ का अन्वेषण इस दृष्टि से ही सम्भव है।" **- S. H. Raza (Indian Contemporary Artist)**

Artist S.H. Raza

किसी प्रेरित करने या ध्यान केन्द्रित करने वाले चित्रों को देखकर यह अनुभव किया जा सकता है कि रंग व्यक्ति की आत्मा की भाषा होते हैं। रज़ा की कृति आरक्त श्याम इसका उदाहरण है। यह कृति लाल रंग के समीपवर्ती रंगों से निर्मित है। इस चित्र में वृत्त कुण्डिलिनी के रूप में अंकित हैं, जो बाहर से अन्दर की ओर जाने पर क्रमशः हल्के से गहरे (नारंगी से गहरे लाल वर्ण के) होते जाते हैं।

Fig.5 Aarakt Shyam, acrylic on Canvas, 39.5"x39.5", 2012

इस वुत्त के केन्द्र में एक काले रंग का वृत्त है जो अनन्त ब्रह्माण्ड का आभास कराता है। इस वृत्त को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि मानों दर्शक का मस्तिष्क केन्द्र बिन्दु के साथ धीरे–धीरे एक–एक स्तर पार कर गहनतम अन्तरिक्ष में लीन हो रहा है व फिर इसी क्रम में वापस आ रहा है। चतुर्भुज आकार में त्रयी सीमा रेखायें हैं जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि ये कुण्डिलिनीनुमा वृत्त को सीमित कर रही हैं। ये रेखायें बाहर से अन्दर की ओर गहरे से हल्के रंग से अंकित हैं। रंगों को एक–दूसरे से भिन्न कर उन्हें स्तर का स्वरूप देने के लिये श्वेत रंग का प्रयोग किया है, जिसके लिये उन्होंने कैनवास को छोड़कर श्वेत रंग का आभास कराया है।

Fig. 6 Sagar, Acrylic on Canvas, 32.5"x23.5", 2012

एक अन्य चित्र ***सागर*** को कलाकार ने एक ही वर्ण की विभिन्न तानों से निर्मित किया है। एकाकी वर्ण योजना के अन्तर्गत निर्मित इस चित्र में रज़ा ने नीले वर्ण की विभिन्न तानों का प्रयोग किया है। नीला रंग शान्ति व शीतलता का प्रतीक है। यह जल तत्व से सम्बन्धित है। इस चित्र को आभासित अधोमुखी रेखाओं द्वारा चार भागों में विभाजित किया गया है। सम्पूर्ण चित्रान्तराल अनेक क्षैतिज रेखाओं द्वारा आच्छादित है। चित्र में नीले रंग की गहरे से हल्की रंगत को क्रमशः नीचे से ऊपर की ओर लगाया है। चित्र के निचले भाग में एक त्रिभुज व मध्य में एक वृत्त है जो एकाएक दर्शक का ध्यान आकर्षित करता है। गहरे से हल्की होती रंगत चित्र में परिप्रेक्ष्य का भाव उत्पन्न करती है व दूसरी ओर हल्की से गहरी रंगत की ओर देखने पर यह समुद्र की अनन्त गूढ़ गहराई का आभास कराता है।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

कृतियों में प्राथमिक रंगों का संयोजन दर्शकों को अत्यधिक प्रभावित करता हैं। रज़ा की कृति **बिन्दु** प्राथमिक रंगों (लाल, नीला, पीला, श्वेत, श्याम) से निर्मित है। इस कृति के सम्पूर्ण चित्रान्तराल पर एक वृहदाकार वृत्त निर्मित व वृत्त के इर्द–गिर्द शेष भाग को श्वेत, पीले, लाल, नीले रंग से संयोजित किया है। वृत्त व अन्य भागों को एक–दूसरे अलग दिखाने के लिये श्वेत रंग का प्रयोग किया है, इस श्वेत रंग के लिये कलाकार ने कैनवास का प्रयोग किया है। इस चित्र में प्राथमिक रंगतों – पीत वर्ण द्वारा पृथ्वी, श्वेत वर्ण से जल, लाल वर्ण से अग्नि, नील वर्ण से आकाश तथा श्याम वर्ण द्वारा अन्तरिक्ष को प्रस्तुत किया है।

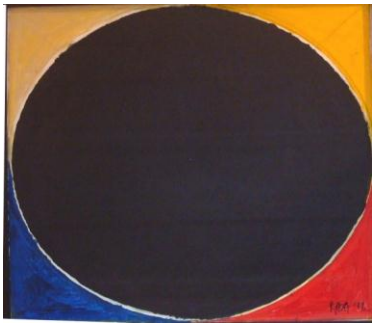

Fig. 7 Bindu, Acrylic on canvas, 20"x20", 2012

रज़ा की प्रमुख विशेषता है उनका रंगों का विशुद्ध प्रयोग। उनके चित्रों में रंग बोलते हैं। एक अन्य कृति **जर्मिनेषन** जिसमें प्राथमिक व द्वितीयक रंगों की विभिन्न तानों को संयोजन है। **जर्मिनेषन** का अर्थ है– *अंकुरण की प्रक्रिया*। इस कृति में कलाकार ने अंकुरण की नाजुक प्रक्रिया को हरे रंग की पृष्ठभूमि से दर्षया है। सम्पूर्ण चित्र को वी–आकार की अधोमुखी रेखाओं की श्रृंखला से भरा है जो कि एक पत्ति के आकार का अनुभव कराती है। चित्र के ऊपर भाग में एक बिन्दु है जो सम्पूर्ण चित्र संयोजन को सन्तुलित करता है। यह रचना बीज से पौध बनने की प्रक्रिया को प्रस्तुत करती है।

I did make the five colours the essential elements of my work, giving importance to colour of itself- visible colour as perceived by the retina- with all the consequence it may have on our senses. Perhaps in colour you can even hear sound! – S.H. Raza

Fig. 8 Germination, Acrylic on Canvas, 23.5”x12”.2012

रज़ा रंग विषयक विचार **अभिव्यंजनावादी चित्रकार *कान्डिस्की*** के रंग व ध्वनि के सम्मिश्रण के सिद्धान्त से समानता रखते हैं। दोनों ही कलाकार अपने चित्रों में रंगों और आकारों के माध्यम से भाषा अभिव्यक्ति का विकास करते हैं, जो देखने वाले को एक ही समय में दृष, श्रवण व गायन की अनुभूति का आभास उत्पन्न करते हैं। शब्दों, रंगों एवम् आकारों की पुनरावृत्ति से उत्पन्न ध्वनि के द्वारा भी भावाभिव्यक्ति होती है। चित्रों की भाषा सांसारिक विचारों व निष्चित भावों को व्यक्त करती है। सभी ललित कलाओं की विषेषताओं से परिपूर्ण कृति दर्शक की इन्द्रियों को प्रभावित करती है। चित्रों का आभास रस पूर्ण होता है, जब **रज़ा** कृतियों का निर्माण करते हैं तब वे श्रोता व गायक, दर्शक व चित्रकार, दोनों की भूमिका का निर्वाह करते हैं, जो कि चित्र के माधुर्य को स्वयं परिवर्तित कर कला आनन्द लेते हैं।
वे त्रुटिरहित और सभी दृष्टियों से पूर्ण संयोजन तथा विशुद्ध रंगों के कलाकार हैं। उनके रंग अलंकारिक नहीं हैं परन्तु उनमें लय आरोही क्रम एवं सन्तुलित रूप में मिलती है। जो एक प्रकार की प्रतिध्वनि उत्पन्न करती हैं। चमकीली तथा समृद्ध रंग योजनाओं के उनके पैटर्न अत्यन्त सरल हैं, जो उनकी अन्तःदृष्टि के परिचायक हैं।

Fig. 9 WASSILY KANDINSKY, Structure Joyeuse, Art Print, 55 x 77.5 cm, 1926

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

सन्दर्भ–

1. *Chaitanya, Krishna* : *A History of Indian painting- The Modern Period, Abhinav Publication, 1994.*
2. *S.H. Raza* : *Bindu Vistaar, presents by Grovsnor Vadhera, 2012.*
3. *S.H. Raza* : *Spandan, Geeti Sen, Lalit Kala Academi, New Delhi, 2009*
4. *Tuli, Neville* : *Indian Contemporary Painting, Mapin Publication Pvt. Ltd., 1997.*
5. *पाण्डेय, संध्या पाण्डेय, आर. पी.* : *भारतीय कला पुर्नजागरण एवं चित्रकार, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।*
6. *साखलकर, आर. वी.* : *आधुनिक चित्रकला का इतिहास, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, राजस्थान।*
7. *तिवारी, रघुनन्दन प्रसाद* : *भारतीय चित्रकला के मूल तत्व, 1975।*
8. *सक्सेना, रणवीर* : *आकार कल्पना, रेखा प्रकाशन, देहरादून, 1958।*
9. *शर्मा, एस. के.,अग्रवाल आर. ए.* : *रूपप्रद कला के मूलाधार, इन्टरनेषनल पब्लिशिंग हाउस, 1995–96।*
10. *कादम्बनी, अप्रैल 2007।*
11. *कला दीर्घा, अप्रैल 2007, अंक 07।*
12. *कला दीर्घा, अक्टूबर 2011, अंक 12।*
13. *समकालीन कला, 2002, फरवरी–मई, ललित कला अकादेमी प्रकाशन, अंक 21।*
14. *http://en.wikipedia.org/wiki/Chromotherapy*
15. *http://www.deeptrancenow.com/colortherapy.htm*
16. *https://www.academia.edu/*
17. *http://www.openthemagazine.com/article/arts/the-enduring-charm-of-the-bindu*
18. *http://www.artnewsnviews.com/view-article.php?article=s-h-raza-the-modern&iid=29&articleid=801*